Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 5, October-2022, ISSN 2230-7540

विद्यार्थियों में मूल्य निर्माण प्रक्रिया में पर्यावरण और शिक्षा के कारकों के प्रभाव का अध्ययन

सीमा वर्मा[1]*, डॉ लता मालवीय[2]

[1,2] भाभा विश्वविद्यालय, भोपाल

सार - मानव जन्म से, पशुवत आचरण करता है किन्तु उसके मूल-प्रवित्यात्मक व्यवहारों का शोधन पर्यावरण के माध्यम से प्रारम्भ होता है। इसी शोधन की प्रक्रिया से मानव व्यवहारों में परिवर्तन प्रारम्भ होता है , इन परिवर्तित व्यवहारों को सामाजिक प्रक्रिया में मूल्य प्रदान कर उन्हें हतोत्साहित अथवा प्रोत्साहित किया जाता है। भारतवर्ष को मूल्यों , मान्यताओं का देश कहा गया है। इसी मिट्टी में भगवान राम कृष्ण तथा महात्मा बुद्ध आदि हमारे पूर्वजो मूल्यों को स्थापना हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। आज भारतीय समाज में मूल्यों के प्रति कम होते विश्वास को रोकना , शिक्षा जगत से जुड़े व्यक्तियों हेतु अति आवश्यक है। इसके लिए विद्यार्थियों की मूल्य निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले पर्यावरण व शिक्षा के विभिन्न कारको को जानना , समझना व इनमें आमूल-चूल परिवर्तन की महती आवश्यकता है। इसके लिए विद्यार्थी के घर से लेकर उसके विद्यालय के अन्दर तक के पर्यावरण को प्रभावित करने वाले तत्वों में व्यापक सुधार तथा शिक्षा-शिक्षण की प्रक्रिया को सरल स्वाभाविक , जिज्ञासु तथा आनन्द दायक बनाया जाना है तभी विद्यार्थियों की मूल्य निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित कर उसे मानवीय ढांचे में ढाला जा सकेगा।

----------X----------

परिचय

मानव सभ्यता के प्रथम चरण से ही अपने व्यक्तित्व के विकास तथा परिष्कार व परिमार्जन के लिए प्रयासरत रहा है। वह सदैव साधारण से असाधारण तथा सामान्य से विशिष्ट बनने के लिए अपने परिश्रम तथा बुद्धि को दिशा दी है। इसी क्रम में उसने अपने अन्दर सद्गुणों का विकास तथा दुष्प्रवृत्तियों का परिमार्जन किया है। इन्हीं सद्गुणों को विकसित करने तथा उन्हे, अंगीकार करने से उसने "मानव" होने की गरिमा भी प्राप्त की है। इसी से उसने पृथ्वी पर अपने श्रेष्ठ होने को सिद्ध किया है। ऐसे में वे विचार , बाते या प्रत्यक्ष जो कि मानव के चारित्रिक गुणों के विकास के साथ-साथ उसके प्रत्येक भौतिक शारीरिक , मानसिक, आध्यात्मिक आदि पक्ष का विकास करते हैं एवं श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करते हैं, उन्हें हम मूल्य कहते हैं।

प्रत्येक सभ्यता के अन्तर्गत चाहे वह ग्रीक हो , रोशन हो अथaवा भारतीय हो उसके अस्तित्व के आधार चिरूतन मूल्य ही रहे हैं। इन मूल्यों से ही उन सभ्यताओं को समय के प्रवाह में स्थिर तथा सुसंस्थापित रखा है। प्रमुख ग्रीक विचारक प्लेटो ने न्याय , साहस तथा संयम को प्रमुख मूल्य मानते हुए 'अच्छे' (Good) को मूल्यों के उच्चतर क्रम में शीर्ष पर स्थापित किया है। भारतीय परम्परा में चिरूतन एवं स्थायी मूल्यों को खोजने का प्रयास किया गया है। इसी के अन्तर्गत भौतिक मूल्यों की अपेक्षा अध्यात्मिक मूल्यों को अधिक श्रेष्ठ निरूपित किया गया है। उपनिषदों में आत्म तथा ब्रह्म को ही परममूल्यो के रूप में व्याख्यापित किया गया है। जब किसी कृत्य , कर्म, विचार या प्रक्रिया की गुणवत्ता , प्रभाव एवं परिणाम पर तर्क संगत तथा बौद्धिक ढंग से विचार किया जाता है और यह विचार न केवल व्यक्ति के लिए स्वयं वरन अन्य के लिए भी उसी अनुपात में समान रूप से लागू होता है साथ ही वह अपने पूर्णीकरण से गहन, सन्तोष की अनुभूति भी कराता है, तब वह मूल्य कहलाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्पष्ट किया गया है कि हमारे बहुवर्गीय समाज में शिक्षा को सर्वव्यापी और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े और संकीर्ण सम्प्रदायवाद , धार्मिक अतिवाद , हिंसा, अन्धविश्वास व भाग्यवाद को

www.ignited.in

समाप्त किया जा सके। हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि मनुष्य अकेला शून्य में निवास करने वाला प्राणी नहीं है। उसकी मूल्यपरक शिक्षा उसके विशिष्ट सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ी होनी चाहिए और विश्वजनीन व शाश्वत मूल्यों से भी उनका सम्बन्ध होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता, पर्यावरण संरक्षण, प्रजातंत्र, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, समाजवाद तथा धर्मनिरपेक्षता आदि मूल्यों की शिक्षा सभी शैक्षिक स्तरों के लिए आवश्यक है। प्रारम्भिक स्तर पर मूल्य की शिक्षा ठोस गतिविधियों तथा जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप तथा पर्यावरण के अनुरूप होनी चाहिए। माध्यमिक तथा अन्य उच्च स्तरों पर विद्यार्थी स्वयं-मूल्यों की तर्किकता को समझकर उन्हें विचार व कार्य रूप में ढाल सकेंगे।

भारतीय संस्कृति में प्राकृतिक सुषमा के प्रति जितना आदर व आकर्षण है, वह किसी से छुपा नहीं है। मनुष्य प्रकृति का पुत्र माना जाता है। प्रकृति के आंगन में विचरण करके वह बड़ा होता है। पर्वत, नदी, तडाग, शस्य श्यामला भूमि और सुवासित वायु हमारे जीवन को स्वच्छ और सुखद बनाती है। इसी क्रम में वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पेड़-पौधें, पशु-पक्षी मानव सब मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। प्रकृति में इन सबकी मात्रा और इनकी रचना कुछ इस प्रकार से व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक संतुलनमय जीवन चलता रहे पर्यावरण शिक्षा बालक को उसके पर्यावरण के प्रति दायित्वों को निभाने हेतु अग्रसर करती है, साथ ही मानवीय विचारों को प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को रोकने तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रयुक्त करने योग्य भी बनाती है तथा पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में भी अपना पूर्ण योगदान देती है।

बालक जन्म लेते हो पर्यावरण की गोद में ही पलता-बढ़ता है। वह निरन्तर अपने पर्यावरण से अनुक्रिया करता है , पर्यावरण के विभिन्न तत्व उसके पालन-पोषण में सम्मिलित होते हैं। धीरे-धीरे वह अपने पर्यावरण से समायोजित होने लगता है। बाल्यावस्था में कदम रखते ही वह विद्यार्थी के रूप में विद्यालय में अध्ययन हेतु प्रवेश होता है। धीरे-धीरे उसमें मूल्यों के निर्माण की प्रक्रिया भी प्रारम्भ हो जाती है। पर्यावरण मूल रूप से विद्यार्थी के घर से उसके विद्यालय तक विस्तृत रूप में फैैला होता है। अध्ययन हेतु घर से विद्यालय आते-जाते वह प्रकृति के विभिन्न तत्वो के प्रत्यक्षीकरण करता है। प्रकृति के इन विभिन्न रूपो से धीरे-धीरे वह परिचित होने लगता है। प्रकृति के विभिन्न तत्व प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष उसकी मूल्य निर्माण की प्रक्रिया के प्रभावित करने लगते हैं। पर्यावरण के विभिन्न कारक मिट्टी , जल, पेड़ पौधे, वायु, आसमान, दिन-रात, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु तथा विभिन्न प्रकार के मौसम आदि विद्यार्थियों के जीवन के विभिन्न अंग बन जाते है। पर्यावरण के ये कारण निश्चित रूप से विद्यार्थियों के मूल्यों को प्रभावित करते हैं। घर से विद्यालय तक जैसा पर्यावरण होगा वैसा ही प्रभाव उसके मूल्यों पर पड़ेगा ऐसे में पर्यावरण की शुद्धता का महत्व अपने आप बढ़ जाता है।

इसी क्रम में मूल्य निर्माण प्रक्रिया के अन्तर्गत शिक्षा व उसके विभिन्न कारकों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यालयी शिक्षा-शिक्षण के अन्तर्गत एक ऐसा वातावरण विद्यालय प्रशासन व शिक्षकों द्वारा निर्मित किया जाता है जिससे अनक्रिया करते वह मूल्यपरक जीवन की यात्रा प्रारम्भ कर देता है ऐसे में यह स्पष्ट है कि विद्यालय का वातावरण तथा कक्षा-कक्ष के अन्दर का वातावरण जितना जिज्ञासु, रोचक, उत्साहवर्धक, प्रेरणादायी, शान्त, आनन्दमय, संज्ञानात्मक व मनोवैज्ञानिक होगा विद्यार्थी उतने ही मनोयोग से अध्ययन में संलग्न रहकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का विकास कर सकेगा साथ ही शिक्षा-शिक्षण के विभिन्न कारक उसकी मूल्य निर्माण प्रक्रिया को तीव्र कर उसे मूल्यपरक जीवन की ओर आकर्षित कर सकेंगे।

शिक्षा आयोग (1964-66) के अनुसार, "विद्यालय का वातावरण अध्यापकों का व्यक्तित्व एवं व्यवहार तथा विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाएं छात्रों को मूल्योन्मुख बनाने में विशेष भूमिका निभाते हैं। " इसी प्रकार विद्यालय की प्रातः कालीन सभा , पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सहगामी क्रियाएं, सभी धर्मों के धार्मिक उत्सवों का आयोजन कार्यानुभव, खेलकूद विषय क्लब समाज सेवा से सभी छात्रों में सहयोग व पारस्परिक सद्भाव , निष्ठा व ईमानदारी, अनुशासन एवं सामाजिक दायित्व आदि जीवन मूल्यों के विकास में सहायक होते है। ऐसे में मूल्यों के विकास हेतु विद्यालय वातावरण लोकतांत्रिक एवं उत्साहवर्धक, स्वच्छ, सौन्दर्यपूर्ण, अनुशानप्रिय एवं सृजनात्मक होना चाहिए। वास्तव में यदि देखा जाय तो पर्यावरण और शिक्षा में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। पर्यावरण के विभिन्न तत्व पग-पग पर विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं जो उनके मूल्यों को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार उपयुक्त पर्यावरण के निर्माण व सृजन के बिना शिक्षार्जन का कार्य सम्भव नहीं है , भले ही वह प्रकृति द्वारा निर्मित अथवा मानव द्वारा सृजित किया गया हो। यही पर्यावरण शिक्षार्जन की प्रक्रिया को आधार प्रदान करता है और इसी से अनुक्रिया करते-करते

www.ignited.in

विद्यार्थी अपने अन्दर मानवीय व सामाजिक मूल्यों सहित अन्य अनेक मूल्यो को आत्मसात कर समाज का आदर्श नागरिक बन जाता है। फ्रैकलिन के अनुसार "समाज शिक्षा संस्थाओं को अपने सदस्यों (विद्यार्थियों) में ज्ञान , कौशलों, आदर्शों मूल्यों तथा आदतों का प्रसार करने एवं सुरक्षित रखने के लिए स्थापित करता है जो कि उसके स्वयं के स्थायित्व एवं निरन्तर विकास के लिए परमावश्यक है।

शैक्षिक प्रक्रिया के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि विद्यार्थियों में अनुकरण व अनुसरण की अपूर्व क्षमता होती है इसका लाभ विद्यार्थियों में मूल्य निर्माण की प्रक्रिया में निश्चित रूप से उठाया जा सकता है। इस हेतु परिवार व विद्यालय प्रशासन को चाहिए कि विद्यार्थियों हेतु एक उपयुक्त पर्यावरण का निर्माण किया जाय इसे विद्यालयी परिवेश को मनोवैज्ञानिक रूप से सृजित करना होगा साथ ही मूल्यों के विकास के सम्बन्ध में एक सृजनात्मक वातावरण का निर्माण करना होगा साथ ही शिक्षा प्रक्रिया को आनन्ददायक व प्रेरक बनाना होगा। तभी विद्यार्थी समाज के योग्य नागरिक बुनकर राष्ट्र को उन्नत एवं समृद्ध गौरवशाली बना सकेंगे। पर्यावरण की उत्कृतष्ता एवं अध्यापकों की आदर्श प्रस्तुति पर ही समाज एवं शिक्षा संस्थापकों से यह अपेक्षा की जा सकेगी कि वे भावी नागरिकों को मूल्योन्मुख बना सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सिंह, ड्रा० शालिनी, पर्यावरण शिक्षा, लखनऊ, ठाकुर पब्लिकेशन, प्रा०लि0, 2022।

2. पाठक, पी०डी०, भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, आगरा, अग्रवाल पाब्लिकेशन्स 2008।

3. शर्मा, डॉ० डी० के०, कुमार, डॉ० सुरेन्द्र , मानव मूल्य एवं नीतियां, मेरठ, रामा पब्लिशिंग हाउस।

4 त्यागी, जी०एस०डी० एवं पाठक , पी०डी, शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त , आगरा-2, विनोद पुस्तक मन्दिर, 2007।

5. खुबालकर, डॉ० भारती, विश्व प्रसिद्ध व्यक्तित्व , दिल्ली, साहनी पब्लिकेसन्श. 2010।

सीमा वर्मा*

भाभा विश्वविद्यालय, भोपाल

Corresponding Author